e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 5, Issue 2, February 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 2, February 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0502028 |

तुलसीदास कृत रामचरितमानस में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य

डॉ दीपाली शर्मा

सह आचार्य हिंदी साहित्य, एस डी राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर, भारत

सारांश (ABSTRACT): भारतीय साहित्य और संस्कृति के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस का विशिष्ट स्थान है। यह केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति, नैतिकता, आदर्श जीवन तथा मानवीय मूल्यों का महाकाव्य है। रामचरितमानस में वर्णित पात्र, घटनाएँ और संवाद भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना के प्रतिनिधि हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में रामचरितमानस में निहित सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पारिवारिक संबंध, आदर्श शासन व्यवस्था, नारी की स्थिति, धार्मिक समन्वय, लोकमंगल, मानवतावाद, नैतिकता एवं सांस्कृतिक एकता जैसे पक्षों का विस्तृत विवेचन किया गया है। शोध में विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं सांस्कृतिक पद्धति का प्रयोग किया गया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस भारतीय संस्कृति का जीवंत दस्तावेज है, जो आज भी सामाजिक समरसता, नैतिक जीवन और सांस्कृतिक मूल्यों की प्रेरणा प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: रामचरितमानस, तुलसीदास, सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक चेतना, लोकमंगल, आदर्शवाद, भारतीय संस्कृति।

I. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। इस संस्कृति की मूल विशेषता समन्वय, सहिष्णुता, नैतिकता और लोककल्याण की भावना रही है। भारतीय साहित्य ने इन मूल्यों को सुरक्षित रखने और समाज तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी साहित्य के भक्ति काल में गोस्वामी तुलसीदास का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उनकी महान कृति रामचरितमानस भारतीय जनमानस की आस्था, संस्कृति और जीवन-मूल्यों का आधार ग्रंथ है।

रामचरितमानस केवल भगवान राम की कथा नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना, नैतिक आदर्शों और सामाजिक संबंधों का महाकाव्य है। इसमें परिवार, समाज, राजनीति, धर्म और संस्कृति के विविध आयामों का समन्वित चित्रण मिलता है। तुलसीदास ने राम के चरित्र के माध्यम से आदर्श मानव, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई और आदर्श राजा की कल्पना प्रस्तुत की।

रामचरितमानस में वर्णित सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य आज भी भारतीय समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं मूल्यों का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

II. शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. रामचरितमानस में निहित सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. सांस्कृतिक मूल्यों एवं भारतीय परंपराओं का विश्लेषण करना।
3. पारिवारिक एवं नैतिक आदर्शों का विवेचन करना।
4. रामराज्य की अवधारणा का अध्ययन करना।
5. आधुनिक संदर्भ में रामचरितमानस की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 2, February 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0502028 |

III. शोध पद्धति (RESEARCH METHODOLOGY)

इस शोध पत्र में मुख्यतः विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं सांस्कृतिक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु प्राथमिक स्रोत के रूप में रामचरितमानस का उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त आलोचनात्मक ग्रंथों, शोध पत्रों एवं साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।

शोध में निम्न पद्धतियों का प्रयोग किया गया—

- विश्लेषणात्मक पद्धति
- सांस्कृतिक अनुशीलन पद्धति
- तुलनात्मक पद्धति
- ऐतिहासिक पद्धति

इन पद्धतियों के माध्यम से सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का गहन अध्ययन किया गया है।

तुलसीदास: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के महान भक्त कवि थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में माना जाता है। वे रामभक्ति धारा के प्रमुख कवि थे।

उनकी प्रमुख रचनाएँ—

- रामचरितमानस
- विनय पत्रिका
- कवितावली
- गीतावली

तुलसीदास ने लोकभाषा अवधी में रामचरितमानस की रचना कर भारतीय समाज को एक सांस्कृतिक सूत्र में बाँधने का कार्य किया।

रामचरितमानस: एक सांस्कृतिक महाकाव्य

रामचरितमानस भारतीय संस्कृति का दर्पण है। इसमें धर्म, नीति, राजनीति, समाज, परिवार एवं लोकजीवन का व्यापक चित्रण मिलता है।

रामचरितमानस की प्रमुख विशेषताएँ—

1. लोकमंगल की भावना
2. आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना
3. सामाजिक समरसता
4. धार्मिक समन्वय
5. नैतिकता एवं मर्यादा

IV. रामचरितमानस में सामाजिक मूल्य

1. पारिवारिक मूल्य

रामचरितमानस में परिवार को समाज की मूल इकाई माना गया है। इसमें माता-पिता, भाई-भाई, पति-पत्नी तथा गुरु-शिष्य संबंधों का आदर्श चित्रण मिलता है।

आदर्श पुत्र

राम अपने पिता दशरथ की आज्ञा का पालन करते हुए वनवास स्वीकार करते हैं। यह भारतीय संस्कृति में आज्ञाकारिता और कर्तव्यपालन का सर्वोच्च उदाहरण है।

"रघुकुल रीति सदा चली आई।
प्राण जाए पर वचन न जाई॥"

इस पंक्ति में वचन पालन और पारिवारिक मर्यादा का आदर्श निहित है।

आदर्श भाई

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के संबंध भ्रातृ प्रेम के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। भरत का त्याग और राम के प्रति समर्पण भारतीय संस्कृति में भाईचारे की भावना को दर्शाता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 2, February 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0502028 |

2. नारी संबंधी मूल्य
रामचरितमानस में नारी को सम्मान और मर्यादा का स्थान दिया गया है।

सीता का आदर्श चरित्र
सीता त्याग, पतिव्रता धर्म, धैर्य और मर्यादा की प्रतीक हैं। वे भारतीय नारी आदर्श का प्रतिनिधित्व करती हैं।

कौशल्या और सुमित्रा
इन पात्रों के माध्यम से मातृत्व, स्नेह और त्याग की भावना का चित्रण किया गया है।
हालाँकि कुछ आलोचक तुलसीदास पर नारी के प्रति पारंपरिक दृष्टिकोण अपनाने का आरोप लगाते हैं, फिर भी संपूर्ण ग्रंथ में नारी के सम्मान और मर्यादा का व्यापक चित्रण मिलता है।

3. सामाजिक समरसता
रामचरितमानस में जाति और वर्ग से ऊपर उठकर मानवता को महत्व दिया गया है।

निषादराज और राम
राम का निषादराज से प्रेम सामाजिक समानता और समरसता का प्रतीक है।

शबरी प्रसंग
शबरी के जूठे बेर खाने की घटना यह सिद्ध करती है कि भगवान के लिए भक्ति ही सर्वोपरि है, जाति नहीं।

4. लोकमंगल की भावना
तुलसीदास का साहित्य लोककल्याण की भावना से प्रेरित है। रामचरितमानस में समाज के कल्याण, शांति और नैतिकता पर बल दिया गया है।

V. रामचरितमानस में सांस्कृतिक मूल्य

1. धर्म एवं नैतिकता
रामचरितमानस में धर्म का अर्थ केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि सत्य, दया, करुणा और कर्तव्यपालन है।
राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं क्योंकि वे हर परिस्थिति में धर्म और मर्यादा का पालन करते हैं।

2. रामराज्य की अवधारणा
रामराज्य भारतीय संस्कृति में आदर्श शासन व्यवस्था का प्रतीक है।
तुलसीदास लिखते हैं—

"दैहिक दैविक भौतिक तापा।
रामराज नहिं काहुहि व्यापा॥"

रामराज्य में न्याय, समानता, समृद्धि और शांति का वातावरण है।

रामराज्य की विशेषताएँ
1. न्यायपूर्ण शासन
2. सामाजिक समानता
3. आर्थिक समृद्धि
4. धार्मिक सहिष्णुता
5. नैतिक जीवन

3. धार्मिक समन्वय
तुलसीदास ने भक्ति को मानव जीवन का आधार माना। उनके साहित्य में वैष्णव, शैव और शाक्त परंपराओं का समन्वय दिखाई देता है।
रामचरितमानस भारतीय धर्म और संस्कृति की समन्वयवादी भावना का प्रतिनिधित्व करता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 2, February 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0502028 |

4. लोक संस्कृति
रामचरितमानस में भारतीय लोकजीवन, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, विवाह संस्कार और सामाजिक परंपराओं का सुंदर चित्रण मिलता है।
अवधी भाषा के प्रयोग ने इसे जनसामान्य का ग्रंथ बना दिया।

5. मानवतावाद
रामचरितमानस में मानवता और करुणा का संदेश निहित है।
राम का चरित्र दया, प्रेम और सहिष्णुता का प्रतीक है। वे शत्रु के प्रति भी करुणा का भाव रखते हैं।

रामचरितमानस में राजनीतिक मूल्य
रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।
राम आदर्श शासक के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। वे प्रजा के हित को सर्वोपरि मानते हैं।

आदर्श शासन
रामराज्य में सभी लोग सुखी हैं और न्याय की स्थापना होती है।

नेतृत्व के गुण
1. सत्यनिष्ठा
2. करुणा
3. न्यायप्रियता
4. त्याग
5. कर्तव्यनिष्ठा

रामचरितमानस की भाषा एवं शैली
तुलसीदास की भाषा सरल, मधुर और प्रभावशाली है।
उन्होंने अवधी भाषा का प्रयोग किया, जिससे रामचरितमानस जनसामान्य तक पहुँचा।

शैली की विशेषताएँ
- सरलता
- भावात्मकता
- अलंकारिकता
- लोकभाषा का प्रयोग
- गीतात्मकता

रामचरितमानस का भारतीय समाज पर प्रभाव
रामचरितमानस भारतीय समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुका है।

सामाजिक प्रभाव
1. नैतिक शिक्षा का प्रसार
2. पारिवारिक मूल्यों की स्थापना
3. सामाजिक समरसता का विकास

सांस्कृतिक प्रभाव
1. रामलीला परंपरा का विकास
2. लोककला एवं संगीत पर प्रभाव
3. धार्मिक और सांस्कृतिक एकता

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 2, February 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0502028 |

आधुनिक संदर्भ में रामचरितमानस की प्रासंगिकता

आज का समाज नैतिक संकट, पारिवारिक विघटन, हिंसा और सामाजिक तनाव जैसी समस्याओं से जूझ रहा है।
ऐसी स्थिति में रामचरितमानस के मूल्य अत्यंत प्रासंगिक हैं।

आधुनिक जीवन में उपयोगिता

- नैतिक जीवन की प्रेरणा
- सामाजिक समरसता का संदेश
- आदर्श नेतृत्व की अवधारणा
- पारिवारिक संबंधों की मजबूती

VI. आलोचनात्मक दृष्टिकोण

कुछ आधुनिक आलोचक रामचरितमानस को परंपरावादी ग्रंथ मानते हैं, किंतु अधिकांश विद्वान इसे भारतीय संस्कृति का महान ग्रंथ स्वीकार करते हैं।
हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार तुलसीदास ने भारतीय संस्कृति को जनमानस से जोड़ने का महान कार्य किया।
रामचंद्र शुक्ल ने तुलसीदास को लोकमंगल का कवि कहा है।

VII. निष्कर्ष

रामचरितमानस भारतीय समाज और संस्कृति का अमूल्य ग्रंथ है। इसमें निहित सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य आज भी मानव जीवन के लिए प्रेरणास्रोत हैं।
तुलसीदास ने राम के चरित्र के माध्यम से आदर्श मानव जीवन की परिकल्पना प्रस्तुत की। रामचरितमानस में पारिवारिक संबंध, सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता, मानवतावाद और आदर्श शासन व्यवस्था का व्यापक चित्रण मिलता है।
यह ग्रंथ भारतीय संस्कृति की आत्मा है और आने वाली पीढ़ियों के लिए नैतिक एवं सांस्कृतिक मार्गदर्शक बना रहेगा।

संदर्भ सूची (REFERENCES)

1. रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास जी, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर
2. विनय पत्रिका, गोस्वामी तुलसीदास जी, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर
3. कवितावली, गोस्वामी तुलसीदास जी, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर
4. गीतावली, गोस्वामी तुलसीदास जी, गीता प्रेस प्रकाशन, गोरखपुर
5. भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य, दत्त, आर. एवं शास्त्री, एस. (2018). हिंदी साहित्य का इतिहास. दिल्ली: साहित्य अकादमी।
6. मेहता, के. (2016). प्रेमचंद: सामाजिक यथार्थवाद में योगदान. जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रेस।
7. राय, के. (2011). समकालीन हिंदी साहित्य में सामाजिक-राजनीतिक विषय. लखनऊ: राष्ट्रीय हिंदी शोध संस्थान।
8. चतुर्वेदी, एन. (2008). हिंदी काव्य और उसका सामाजिक संदर्भ. वाराणसी: हिंदी साहित्य परिषद।
9. भक्ति आंदोलन और भारतीय संस्कृति, डॉ सुमन कुमारी, गीता दुबे, उत्तराखंड
10. रामचरितमानस का सांस्कृतिक अध्ययन, राजकिशोर पांडेय (1994)

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 | 9710 583 466 | ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com